अध्याय
05

जन-संघर्ष और आंदोलन

सीखने के प्रतिफल:-

इस अध्याय में विद्यार्थी लोकतांत्रिक व्यवस्था में जन-संघर्ष तथा जन-संघर्ष के विभिन्न कारणों को समझ सकेंगे।

परिचय

लोकतंत्र में जिनके पास सत्ता होती है, उन्हें परस्पर - विरोधी मांगो और दबावों में संतुलन बैठाना पड़ता है। परस्पर विरोधी मांगो और दबावों के बीच ही लोकतंत्र अपना आकार ग्रहण करता है। आम नागरिक विभिन्न तरीकों तथा संगठनों के सहारे लोकतंत्र में अपनी भूमिका निभाते हैं।

- **लोकतंत्र और जन-संघर्ष:-** लोकतंत्र का विकास जन-संघर्ष के जरिए ही होता है। लोकतांत्रिक संघर्ष का समाधान जनता की व्यापक लामबंदी, दबाव समूह तथा आंदोलनों के जरिए होता है।
- **लामबंदी और संगठन:-** लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी संघर्ष के पीछे बहुत

नेपाल तथा बोलीविया में जन-संघर्ष

सन 2006 के अप्रैल माह में नेपाल में एक विलक्षण जन- आंदोलन उठ खड़ा हुआ, जिसका लक्ष्य शासन की बागडोर राजा के हाथ से लेकर दोबारा जनता के हाथों में सौंपना था।

बागी माओवादी के साथ-साथ अन्य संगठन भी साथ हो लिए। इस जन आंदोलन के आगे राजा को झुकना पड़ा तथा नेपाल में संसद फिर से बहाल हुई एवं गिरिजा प्रसाद कोइराला को अंतरिम सरकार का प्रधानमंत्री चुना गया।

सन 2000 में बोलीविया के लोगों ने पानी के निजीकरण के खिलाफ एक सफल संघर्ष चलाया, जिसमें वहां के श्रमिकों, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं तथा नेताओं ने हिस्सा लिया। इस आंदोलन के फलस्वरूप सरकार को झुकना पड़ा तथा बहुराष्ट्रीय कंपनी के अधिकारियों को शहर छोड़कर भागना पड़ा।

इस आंदोलन को 'बोलीविया के जल युद्ध' के नाम से जाना जाता है।

© JCERT not to be republished

से संगठन होते हैं। ये संगठन लोगों को लामबंद करके राष्ट्र की नीति को प्रभावित करतें है।

नेपाल के जन संघर्ष में मजदूर, शिक्षक, नेता, वकील तथा मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने लामबंद होकर राजाशाही के विरोध में आंदोलन छेड़ा।

- **दबाव-समूह या हित-समूह:-** जब कोई संगठन अपने सदस्यों के हितों की पूर्ति के लिए राजनीतिक सत्ता को प्रभावित करता है और उनकी पूर्ति के लिए सत्ता पर दबाव डालता है, तो उस संगठन को दबाव समूह कहा जाता है।

  राजनीतिक पार्टियों के समान दबाव समूह सत्ता पर प्रत्यक्ष नियंत्रण अथवा हिस्सेदारी में भाग नहीं लेता, बल्कि वह समान पेशे, हित, आकांक्षा अथवा मत के लोगों के लिए एकजुट होता है।

  i. वर्ग विशेष के हित समूह-यह दबाव समूह वर्गविशेषी होते हैं, क्योंकि यह समाज के किसी खास तबके मसलन मजदूर, कर्मचारी, व्यवसायी, उद्योगपति या धर्म विशेष के अनुयायियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे- बार एसोसिएशन, रेलवे यूनियन, एसोचैम, फिक्की इत्यादि।

  ii. सामान्य के हित समूह-कुछ संगठन जन सामान्य का प्रतिनिधित्व करते हैं।ये संगठन जन सामान्य के सर्वमान्य हितों को लेकर सत्ता पर दबाव बनाते हैं। जैसी नारी उत्थान, पर्यावरण, निशस्त्रीकरण तथा विश्व शांति से संबंधित दबाव समूह।

- **आंदोलनकारी समूह:-** ऐसा समूह, जिसमें कुछ लोगों का एक साथ मिलना हो और वे लोग मिलकर किसी भी सरकार की राजनीतिक, सामाजिक या आर्थिक नीति के खिलाफ आंदोलन करें उसे ही आंदोलनकारी समूह कहा जाता है।

  भारत में नर्मदा बचाओ आंदोलन, नेपाल में राजशाही के खिलाफ आंदोलन इसका सबसे अच्छा उदाहरण है।

- दबाव समूह तथा जन-आंदोलन का राजनीति पर प्रभाव।

- दबाव समूह और आंदोलन अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जनता का समर्थन हासिल करने की कोशिश करता है। इसके लिए सूचना अभियान, बैठक इत्यादि का आयोजन करता है।

- कुछ दबाव समूह पेशेवर लॉबी नियुक्त करते हैं तथा महंगे विज्ञापनों तथा मीडिया समूह को प्रभावित करके सत्ता पर दबाव बनाती है।

- कभी-कभी जन आंदोलन राजनीतिक दल का रूप अख्तियार कर लेते हैं जैसे- दिल्ली में 'आम आदमी पार्टी' तथा असम में 'असम गण परिषद'।

निष्कर्ष - दबावसमूह और आंदोलनों के कारण ही लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हुई है। शासकों के ऊपर दबाव डालना लोकतंत्र में कोई अहितकर गतिविधि नहीं है, बशर्ते इसका अवसर सभी को प्राप्त हो। जनसाधारण के हित समूह तथा आंदोलन आम नागरिक की जरूरतों तथा सरोकारों से सत्ता को अवगत कराते है।

© JCERT not to be republished

पाठ्यपुस्तक के प्रश्न

प्रश्न 1. दबाव-समूह और आंदोलन राजनीति को किस तरह प्रभावित करते हैं?

उत्तर: दबाव समूह तथा जन आंदोलन जनता की सहानुभूति प्राप्त करके, मीडिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके तथा विपक्षी दलों को समर्थन में लेकर अपनी मांगों को सरकार के सामने रखती है तथा सरकार से अपनी मांग को मनवाकर अनेक ढंग से राजनीति को प्रभावित करते हैं।

प्रश्न 2. दबाव-समूहों और राजनीतिक दलों के आपसी संबंधों का स्वरूप कैसा होता है, वर्णन करें।

उत्तर: कई दबाव समूह राजनीतिक दलों द्वारा ही बनाए गए होते हैं और कुछ जगह यह देखा गया है कि जो दबाव समूह पहले आंदोलनों का सहारा लेते थे, बाद में वही एक राजनीतिक पार्टी के रूप ले लेते हैं और कई बार तो राजनीतिक दलों के नेता इन दबाव समूहों से ही आते हैं। जैसे भारत में आम आदमी पार्टी, असम गण परिषद इत्यादि।

प्रश्न 3. दबाव-समूहों की गतिविधियाँ लोकतांत्रिक सरकार के कामकाज में कैसे उपयोगी होती हैं?

उत्तर: लोकतंत्र में शासकों पर दबाव डालना कोई बुरी बात नहीं है। यदि इस दबाव से दूसरे वर्गों का आहित ना हो। दबाव समूह सरकार को आम नागरिक की कठिनाइयों और आवश्यकताओं से अवगत कराते हैं। जिससे सरकार को निर्णय करने में आसानी होती है।

प्रश्न 4. दबाव-समूह क्या हैं? कुछ उदाहरण बताइए।

उत्तर: जब कुछ लोग अपने विशेष उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संगठन बनाते हैं तो ऐसे संगठनों को दबाव-समूह कहा जाता है।

प्रश्न 5. दबाव-समूह और राजनीतिक दल में क्या अंतर है?

उत्तर: दबाव समूह तथा राजनीतिक दल में निम्नलिखित अंतर है-

A. दबाव-समूहों का देश की सत्ता संभालने का कोई लालच नहीं होता है,जबकि राजनीतिक दलों का उद्देश्य सत्ता होता है।

B. दबाव समूहों के सदस्यों की संख्या राजनीतिक दलों के मुकाबले बहुत कम होती है, जबकि राजनीतिक दलों में सदस्यों की संख्या हजारों में या लाखों में भी हो सकती है।

© JCERT not to be republished

C. दबाव-समूहों का उद्देश्य सीमित होता है, जबकि राजनीतिक दलों का उद्देश्य विस्तृत होता है यह लगभग जीवन के हर पहलू राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक जीवन आदि को छूते हैं।

उदाहरण: वकील, किसान, अध्यापक या मजदूर वर्ग अपने हितों की पूर्ति के लिए दबाव-समूह

प्रश्न 6. जो संगठन विशिष्ट वर्ग जैसे मज़दूर, कर्मचारी, शिक्षक और वकील आदि के हितों को बढ़ावा देने की गतिविधियाँ चलाते हैं उन्हें ..... कहा जाता है।

उत्तर: दबाव-समूह।

प्रश्न 7. निम्नलिखित में किस कथन से स्पष्ट होता है कि दबाव-समूह और राजनीतिक दल में अंतर होता है

(क) राजनीतिक दल राजनीतिक पक्ष लेते हैं जबकि दबाव-समूह राजनीतिक मसलों की चिंता नहीं करते।

(ख) दबाव-समूह कुछ लोगों तक ही सीमित होते हैं जबकि राजनीतिक दल का दायरा ज्यादा लोगों तक फैला होता है।

(ग) दबाव समूह सत्ता में नहीं आना चाहते जबकि राजनीतिक दल सत्ता हासिल करना।

(घ) दबाव-समूह लोगों की लामबंदी नहीं करते जबकि राजनीतिक दल करते हैं।

उत्तर: (ग)

प्रश्न 8. सूची I (संगठन और संघर्ष) का मिलान सूची II से कीजिए और सूचियों के नीचे दी गई सारणी से सही उत्तर चुनिए:

	सूची I		**सूची II**
1	किसी विशेष तबके या समूह के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन	(क)	आंदोलन
2	जन-समान्य के हितों को बढ़ावा देने वाले संगठन	(ख)	राजनीतिक दल
3	किसी राजनीतिक समस्या के समाधान के लिए चलाया गया एक ऐसा संघर्ष जिसमें सांगठनिक संरचना हो भी सकती है और नहीं भी।	(ग)	वर्ग-विशेष हित समूह

© JCERT not to be republished

4 ऐसा संगठन जो राजनीतिक सत्ता पाने की गरज से लोगों को लामबंद करता है।
(घ) लोक कल्याणकारी हित समूह

	1	2	3	4
(क)	ग	घ	ख	क
(ख)	ग	घ	क	ख
(ग)	घ	ग	ख	क
(घ)	ख	ग	घ	क

उत्तर: (ख)

प्रश्न 9. सूची I का सूची II से मिलान करें और सूचियों के नीचे दी गई सारणी में सही उत्तर को चुनें।

सूची I	सूची II
1. दबाव-समूह	(क) नर्मदा बचाओ आंदोलन
2. लम्बी अवधि का आंदोलन	(ख) असमगण परिषद्
3. एक मुद्दे पर आधारित आंदोलन	(ग) महिला आंदोलन
4. राजनीतिक दल	(घ) खाद विक्रेताओं का संघ

	1	2	3	4
(अ)	घ	ग	क	ख
(ब)	ख	क	घ	ग
(स)	ग	घ	ख	क
(द)	ख	स	ग	क

उत्तर: (अ)

प्रश्न 10. दबाव-समूहों और राजनीतिक दलों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

(क) दबाव-समूह समाज के किसी खास तबके के हितों की संगठित अभिव्यक्ति होते हैं।

(ख) दबाव-समूह राजनीतिक मुद्दों पर कोई न कोई पक्ष लेते हैं।

© JCERT not to be republished

(ग) सभी दबाव-समूह राजनीतिक दल होते हैं।

अब नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनें:

(अ) क, ख और ग

(ब) क और ख

(स) ख और ग

(द) क और ग

उत्तर: (ब)

प्रश्न 11. मेवात हरियाणा का सबसे पिछड़ा इलाका है। यह गुड़गाँव और फरीदाबाद जिले का हिस्सा हुआ करता था। मेवात के लोगों को लगा कि इस इलाके को अगर अलग जिला बना दिया जाय तो इस इलाके पर ज्यादा ध्यान जाएगा। लेकिन, राजनीतिक दल इस बात में कोई रुचि नहीं ले रहे थे। सन् 1996 में मेवात एजुकेशन एंड सोशल आर्गेनाइजेशन तथा मेवात साक्षरता समिति ने अलग जिला बनाने की मांग उठाई। बाद में सन् 2000 में मेवात विकास सभा की स्थापना हुई। इसने एक के बाद एक कई जन-जागरण अभियान चलाए। इससे बाध्य होकर बड़े दलों यानी कांग्रेस और इंडियन नेशनल लोकदल को इस मुद्दे पर अपना समर्थन देना पड़ा। उन्होंने फ़रवरी 2005 में होने वाले विधान सभा के चुनाव से पहले ही कह दिया कि नया0 जिला बना दिया जाएगा। नया जिला सन् 2005 को जुलाई में बना।

इस उदाहरण में आपको अंदोलन, राजनीतिक दल और सरकार के बीच क्या रिश्ता नजर आता है? क्या आप कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हैं जो इससे अलग रिश्ता बताता हो ?

उत्तर: इस उदाहरण से यह स्पष्ट निष्कर्ष निकलता है कि आंदोलनों, राजनीतिक दलों और सरकार में बड़ा गहरा सम्बन्ध होता है।

जिसे इस उदाहरण से समझा जा सकता है- पहले तो मेवात के लोगों ने मेवात को जिला बनाने की मांग रखी, उसपर किसी भी राजनीतिक दल ने कोई ध्यान नहीं दिया। परंतु जब अनेक जल-कल्याण समूहों, जैसे मेवात एजुकेशन एवं सोशल आर्गनाइज़ेशन, मेवात विकास आदि ने जन- आंदोलन चलाए तो विभिन्न राजनीतिक दलों को उनकी मांग पर ध्यान देना पड़ा और बाद में जब एक दल की सरकार बन गई तो उसने 2005 में नए मेवात जिले के निर्माण की घोषणा कर दी।

© JCERT not to be republished

अभ्यास के प्रश्न

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. आम नागरिक विभिन्न तरीकों तथा संगठनों के द्वारा.....अपनी भूमिका निभाते हैं-

   a. राजतंत्र में

   b. लोकतंत्र में

   c. भीड़- तंत्र में

   d. इनमें से कोई नहीं

2. नेपाल में राजशाही के खिलाफ जन- आंदोलन कब हुआ?

   a. 2006 b. 2009.

   c. 2005 d. 2000

3. लोकतंत्र का विकास.....के जरिए होता है।

   a. राजा

   b. नेता

   c. जनसंघर्ष

   d. इनमें से कोई नहीं

4 एक दबाव समूह है।

   a. एसोचैम

   b. राजनेता

   c. राजनीतिक दल

   d. इनमें से कोई नहीं

© JCERT not to be republished

5. किस देश के जन -आंदोलन को जल युद्ध कहा जाता है?

   a. भारत

   b. अमेरिका

   c. बोलीविया

   d. दक्षिण अफ्रीका

लघु उत्तरीय प्रश्न-

6. नेपाल में जन आंदोलन के बाद अंतरिम सरकार का प्रधानमंत्री किसे बनाया गया?

7. फिक्की तथा एसोचैम किस प्रकार का समूह है?

8. बोलीविया का जन आंदोलन कब तथा क्यों हुआ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

9. जन-संघर्ष तथा आंदोलन का परिचय दें।नेपाल तथा बोलिविया के जन- संघर्षों की चर्चा करें।

10. हित समूह से आप क्या समझते हैं? विभिन्न प्रकार के हित समूहों की चर्चा करें।

© JCERT not to be republished